भूमिका

आज के भूमंडलीकृत विश्व में अनुवाद की माँग निरंतर बढ़ती जा रही है। अनुवाद के कार्यक्षेत्र में जहाँ दिनों-दिन विस्तार हो रहा है, वहीं एक स्वतंत्र अनुशासन के बतौर इसके सैद्धांतिकीकरण के आयाम भी विस्तृत हो रहे हैं। विभिन्न भाषाओं के बीच अनुवाद की भूमिका एक सेतु की तरह होती है, जिससे भाषाओं के बीच दूरियाँ कम होती हैं। अनुवाद के बढ़ते महत्व का परिचय का एक प्रमुख तथ्य यह है कि अनुवाद के कारण विश्व के सारे देशों, प्रदेशों, समाजों के बीच की भौगोलिक, सामाजिक-सांस्कृतिक और भाषिक सीमाओं के बीच वैचारिक, सृजनात्मक और कार्यात्मक तालमेल बनाए रखने के अवसरों में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है।

किसी विशिष्ट व्यक्ति के जीवन वृतांत को जीवनी कहते है। विशिष्ट व्यक्तित्व के सभी लोग नहीं होते है, समाज और देश के कुछ चुने हुए लोग ही विशिष्ट होते हैं। उनकी यह विशेषता उनके विशेष कार्यों पर निर्भर करती है। ऐसे ही विशिष्ट पुरुषों की जिवानी लिखी जाती है। जीवनी में जीवन की अस्थिर घटनाओं का और जीवन चरित्र में नायक के आतंरिक गुणों का समावेश किया जाता है। सच तो यह है कि जीवनी में किसी चरित्र नायक के अंदर और बाह्य दोनों प्रकार की जीवनी गद्य घटनाओं और गुणों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जाता है।

साहित्यानुवाद के क्षेत्र में अनुवाद की एक विशिष्ट भूमिका बनती है। साहित्य चूँकि अपनी पैदाइश से ही सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को अभिव्यक्त करने की दिशा में उन्नत रहा है, अतः इस क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका सर्वाधिक महत्व की हो जाती है। साथ ही, साहित्य राष्ट्रीय और भावनात्मक आयामों की विशिष्ट अभिव्यक्ति का माध्यम रहा है, अतः वैश्विक होने के साथ-साथ साहित्य का स्थानिक महत्व भी होता है। राष्ट्रीय एकता की संकल्पना को साकार करने का अहम कार्यभार साहित्य के

प्रमुखतम कार्यभारों में से एक है। साहित्यानुवाद का महत्व इस अर्थ में और श्रेष्ठ हो जाता है। साहित्य अनुवाद की प्रेरणा में वैश्विक मूल्यों के प्रति इन्हीं आग्रहों को एक प्रमुख कारक के बतौर देखा जाता है

प्रस्तुत शोध में लेखक और पत्रकार पी.आर.सुभाषचंद्रन द्वारा लिखित 'हु रोट मॉय डेस्टिनी' जीवनी के हिंदी अनुवाद का अध्ययन किया गया है। 'हु रोट मॉय डेस्टिनी' जीवनी का हिंदी में अनुवाद प्रोफेसर.टी.वी.कट्टीमनी जी ने 'किसने मेरा भाग्य लिखा' नाम से किया है। भारतीय अंग्रेजी साहित्य से तात्पर्य यह है की जो मूलतः अंग्रेजी भाषा में लिखा गया हो। भारतीय-अंग्रेजी साहित्य आंग्ल-साहित्य की परंपरा से भिन्न सहित्य है।

'हु रोट मॉय डेस्टिनी' जीवनी का प्रकाशन 2011 में हुआ। पी.आर.सुभाषचद्रन जी ने इस जीवनी को एक ऐसे व्यक्ति पर लिखने का निर्णय किया जो एक अछूत, गरीब लड़का था, जिसने अपने जीवन के हर उस कठिनाई को बिना हार माने पार करके आज एक सफल राजनेता के रूप में सबके सामने मौजूद है और वो हैं श्री सुशीलकुमार शिंदे जी जो महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री और संघ कैबिनट मंत्री भी रहे चुके हैं अपने मेहनत और परिश्रम से आज न की उन्होंने खुद के जीवन को संवारा है, बल्कि एक राजनेता की हैसियत से उन्होंने बहुत से गरीब,दलित और उनके राज्य की जनता की मदद भी की है। इस जीवनी को लिखने का लेखक का मुख्य उद्देश्य यह भी था कि - उनको इस बात की आशा थी कि जिस तरह शिंदे जी के घरेलु नौकर से राजनीतिक विकास की सरंचना इस जीवनी में की गई है उसे पढ़कर कई ऐसे लोग जो गैर- विशेषाधिकार पृष्ठभूमि के है उन्हें असंभव दिखने जैसे कार्यो को सफल बनाने के प्रयास करने के लिए यह जीवनी प्रेरित करेगी।

'हु रोट मॉय डेस्टिनी' का हिंदी में अनुवाद 'किसने मेरा भाग्य लिखा' नाम से हुआ है। इसका प्रकाशन 2012 में हुआ। इसके अनुवादक प्रसिद्ध कन्नड़ लेखक प्रोफेसर.टी.वी.कट्टमनी हैं और वो अब इंदिरा गांधी ट्राइबल यूनिवर्सिटी, अमरकंटक के कुलपति मोहदय के रूप में कार्यरत हैं। उनकी मातृभाषा

कन्नड़ होने के बावजूद भी उन्होंने इस जीवनी का अनुवाद हिंदी में किया और इस पुरे जीवनी में उन्होंने कहीं भी अपनी मातृभाषा का प्रभाव इस जीवनी के हिंदी अनुवाद में नहीं पड़ने दिया। अनुवादक ने इस जीवनी का एक अच्छा और सफल अनुवाद किया है। उन्होंने इस जीवनी को रोचक बनाने के लिए अनुवादक के स्वतंत्रता का भरपूर प्रयोग किया है -प्रोफेसर.टी.वी.कट्टमनी जी ने अपने हिंदी अनुवाद में उद्धरणों का बहुत प्रयोग किया है, जिससे पाठकों को उद्धरणों द्वारा पाठ ज्यादा अच्छे तरीके से समझ मैं आ सकें, इस जीवनी के मूल कृति में देखने को नहीं मिली है। प्रस्तुत लघु-शोध कार्य में अनुवादित कृति का अनुवाद विज्ञान की संपूर्ण दृष्टि सेतुलनात्मक अध्ययन और विश्लेषण किया गया है।

शोध परिकल्पना

जीवनी और साहित्य का अविछिन्न संबंध है। सामान्यता: साहित्य को जीवन की आलोचना कहा जाता है, जबकि जीवनी भोगे हुए क्षणों का आध्यात्मिक सुखों-दुखों का सच्चा लेखा-जोखा है। जीवनी एक ऐसे व्यक्ति के बारे में लिखी जाती है जो एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहा हो तथा कुछ ऐतिहासिक महत्वपूर्ण घटनाओं का साक्षी भी रहा हो। ऐसा व्यक्ति अपने बारे में दिलचस्पी जगाने में सक्षम होता ही है। ऐसे ही व्यक्ति हैं 'सुशील कुमार शिंदे' जो एक भारतीय राजनीति के प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित नेता भी है। सुशील कुमार शिंदे जी के जीवन पर आधारित "हु रोट मॉय डेस्टिनी" एक प्रसिद्ध जीवनी है जिसका अनुवाद अंग्रेज़ी, हिंदी तथा तेलगु के साथ-साथ कई और भाषाओं में भी हुआ है, तथा उनके जीवन से कुछ-कुछ अंश इस मराठी भाषा फिल्म में लिए गए हैं जिसका नाम 'दूसरी गोष्ट'है। सुशील कुमार एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के व्यक्ति होने के साथ-साथ बहुत प्रसिद्ध भी है। इनके जीवन पर लिखी गई जीवनी ने मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और उनकी जीवनी को पढ़कर मेरी उत्सुकता और जिज्ञासा ने मुझे इस लघु-शोध के प्रस्तुत विषय की ओर प्रेरित किया, जो इस प्रकार है "किसने मेरा भाग्य लिखा का अनुवादपरक विश्लेषण"।

शोध का महत्व

आज के समय की माँग को देखते हुए तथा व्यावहारिकता की दृष्टी से सामाज के प्रभावशाली और प्रतिष्ठित व्यक्तियों की जीवनीयों से देश-विदेश के लोग बहुत प्रभावित होते हैं। आज आधुनिक और विकासशील संसार में ऐसे व्यक्तियों की बहुत आवश्यकता है जिन्हें प्रेरणास्रोत मानकर तथा उनकी मेहनत, लग्न तथा जीवन यात्रा के बारे में जानकर समाज के लोग उनसे प्रेरणा लें सकें और एक बेहतर

और उज्जवल भविष्य की ओर अग्रसित हो सकें। "किसने मेरा भाग्य लिखा" भी ऐसी ही एक जीवनी है जिसमें महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री के जीवन की यात्रा के बारे में लिखा गया है।

साहित्यिक विधा के रूप में जीवनी की अपनी अलग विशिष्टता है। आज विश्व के सभी प्रसिद्ध अनुवादक जीवनीयों के अनुवाद में रुचि दिखा रहे हैं तथा अनुवादकों द्वारा बहुत बड़ेपैमाने पर जीवनीयों का अनुवाद भी किया जा रहा है। आज अनुवाद के क्षेत्र में एक ही जीवनी का अनुवाद कई भाषाओं में भिन्न-भिन्न अनुवादकों द्वारा किया जाता है, जिसका किसी एक भाषा में जिसमें जीवनी का अनुवाद हुआ हो, उसका भाषापरक विश्लेषण करना अनिवार्य हो जाता है। इसीलिए 'किसने मेरा भाग्य लिखा' में सुशील कुमार शिंदे के प्रमाणिक जीवन की यात्रा कथा स्मृतियों पर लिखा है। इस जीवन यात्रा का अंग्रेज़ी और हिंदी दोनों भाषाओं में अनुवाद हुआ है, जिसका हिंदी भाषा की दृष्टी से अनुवादपरक भाषा विश्लेषण किया गया है।।

प्रस्तुत लघु-शोध कार्य इसी दिशा में उठाया गया एक छोटा सा कदम है। हिंदी भाषा की दृष्टी से अनुवादपरक विश्लेषण किया गया है। इससे हिंदी भाषा-भाषी लोगों तक भी इस जीवनी में कही गई बातें पहले से ज़्यादा सहज तथा प्रभावशाली रूप से पहुँच सके। इस लघु-शोध कार्य से जीवनी में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों और ऐसे विषय पर अनुवाद करने वाले अनुवादकों को एक दिशा के रूप में मदद मिल सकती है।

शोध प्रविधि

सर्वप्रथम इस लघु-शोध कार्य के लिए मूल एवं अनुदित दोनों कृतियों को अनुवादपरक विश्लेषण का चुना गया है। अंग्रेज़ी जीवनी "हु रोट मॉय डेस्टिनी" का हिंदी अनुवादपरक विश्लेषनात्मक अध्ययन किया गया है। इस लघु-शोध कार्य में हिंदी भाषा के शब्द, वाक्य, मुहावरे तथा लोकोक्तियों के स्तर पर अनुवादपरक विश्लेषण किया गया है, जिसका अध्ययन करने लिए प्रस्तुत शोध कार्य में तुलनात्मक तथा विश्लेष्णात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

साहित्य पुनरावलोकन

प्रस्तुत लघु-शोध कार्य के दौरान विषय से संबंधित साहित्य का गहन अध्ययन किया गया है। लघुशोध कार्य को पूरा करने के लिए जीवनी की अंग्रेज़ी "हु रोट मॉय डेस्टिनी" और उसकी हिंदी अनुदित कृति "किसने मेरा भाग्य लिखा" पुस्तकों के साथ-साथ जीवनी से संबंधित ईसाधनों का भी अध्ययन किया गया है।